कॅनफेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री (सी आई आई) के राष्ट्रीय सम्मेलन-2006 में प्रधानमंत्री का भाषण

18 अप्रैल, 2006
नई दिल्ली

मुझे आप लोगों के साथ आपके वार्षिक सत्र में भाग लेते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। मैं भारतीय उद्योग संघ को बधाई देना चाहता हूँ कि उन्होंने भारतीय व्यवसाय को उन्नति के शिखर पर ले जाने तथा राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की उपलब्धियों को उजागर करने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया है।

मैं हमारे सर्वाधिक कर्मठ तथा समर्पित व्यावसायिक नेताओं में से एक श्री ब्रिज लाल मुंजाल के साथ इस मंच पर उपस्थित होने का अवसर पाकर स्वयं को वास्तव में अत्यधिक सम्मानित महसूस कर रहा हूं। वह हमारे समय के भारतीय विनिर्माण उद्यम की सक्रियता, उद्यमशीलता व समर्पणभाव के प्रतीक हैं। उनकी जीवनयात्रा स्वतंत्र भारत की अब तक की यात्रा को प्रतिबिम्बित करती है। मैं हमारे व्यावसायिक नेताओं की देशभक्ति और प्रतिबद्धता का अभिनंदन करता हूँ। पिछले दो दशकों में, भारतीय उद्यम ने विश्वव्यापी प्रतियोगिता की चुनौती का बहुत ही सूझबूझ के साथ सामना किया है। मैं, सी आई आई की परिवर्तन और विकास के इस ऋण में सहयोग देने के लिए प्रशंसा करता हूँ। हमारी सरकार इस बात के लिए कठिन परिश्रम कर रही है कि विश्वव्यापी परिवेश को भारतीय उद्यमों के लिए अनुकूलतम बनाया जा सके। जैसा कि मैंने कई बार कहा है कि विश्व भारत का शुभचिंतक है। हमें मुख्यतया जिन चुनौतियों का सामना करना है वे घरेलू चुनौतियां हैं तथा हम इन चुनौतियों का सामना करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ है।

हाल ही में हमारी अर्थव्यवस्था में निवेश दर का जो रूझान रहा उसे देख कर मैं बहुत उत्साहित हूँ व मेरे मन में बहुत सी आशाएं जन्म ले रही हैं। यह वर्ष भारतीय विनिर्माण उद्यम के लिए बहुत अच्छा वर्ष रहा है। जब मैं भविष्य की ओर दृष्टि करता हूँ तो महसूस होता है कि हम न केवल आर्थिक विकास की लगभग 8.0% की वर्तमान दर को कायम रख सकते हैं अपितु 10% की दर के लक्ष्य को पूरा करने की भी पूरी-पूरी आशा कर सकते है। हालांकि अपनी संवृद्धि प्रक्रिया को सामाजिक व आर्थिक रूप से व्यापक आधार प्रदान करने की चुनौती भी हमारे समाने खड़ी है। हमारी सरकारी ऐसा आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक परिवेश निर्मित करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ है जिसमें हमारे लोगों की सृजनशीलता व उद्यम पूर्ण रूप से विकसित हो सके।

बहनो और भाइयो,

इस वर्ष आपने आपना ध्यान प्रतिस्पर्धात्मकता व विकास पर केंद्रित किया है। यदि भारतीय अर्थ व्यवस्था विश्वव्यापी रूप से अधिक प्रतिस्पर्धात्मक नहीं बनेगी, यदि आपकी प्रत्येक फर्म विश्वव्यापी रूप से प्रतिस्पर्धा करने की योग्यताएं प्राप्त नहीं करेगी तो हम विकास प्रक्रिया

को स्थायित्व प्रदान नहीं कर पाएंगे। इसी के साथ-साथ यदि हम विकास के लाभों को व्यापक आधार पर आगे नहीं पहुंचाएंगे, सामाजिक एवं आर्थिक अवसंरचना तथा मानवीय क्षमताओं में धन लगाने का प्रयास नहीं करेंगे तो हम अधिक प्रतिस्पर्धात्मक अर्थव्यवस्था निर्मित नहीं कर पाएंगे।

हमारी सरकार का मानना है कि संतुलित व चहुमुखी विकास के लिए तथा उच्च संवृद्धि दर को कायम रखने के लिए यह जरूरी है कि कृषि व विनिर्माण क्षेत्र एक साथ विकास करें। वास्तव में कृषि उत्पादन तथा उत्पादिता में उच्च संवृद्धि की हमारी कार्यनीति और औद्योगिक संवृद्धि व विकास की हमारी कार्यनीति परस्पर सम्बद्ध होनी चाहिए। हमने इस तथ्य को समझा है। जो लोग कृषि क्षेत्र से बाहर निकलना चाहेंगे उन बड़ी संख्या में लोगों के लिए आवश्यक रोज़गार की व्यवस्था केवल विनिर्माण क्षेत्र ही कर सकता है। विनिर्माण क्षेत्र एकाकी तौर पर विकास नहीं कर सकता है। शेष अर्थव्यवस्था से कटकर छोटे-छोटे क्षेत्रों या भूभागों में इसका विकास संभव नहीं है। औद्योगिक संवृद्धि की उच्च दर को बनाए रखने के लिए हमें एक विश्वसनीय समष्टि अर्थशास्त्रीय परिवेश, बेहतर अवसंरचना तथा सहायक राजनीतिक व सामाजिक परिवेश की आवश्यकता है।

बहनो और भाइयो,

मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि हमारी सरकार द्वारा गठित (राष्ट्रीय विनिर्माण प्रतियोगी परिषद्) ने वास्तव में ऐसा समग्र दृष्टिकोण अपनाया है। मैं परिषद् के इस विचार से सहमत हूँ कि विनिर्माण एक ऐसा प्रभावशाली घटक है जिसके कारण रोजगार सृजन आय तथा आऊटपुट में संवृद्धि होती ही है। यह राष्ट्रीय आय में विनिर्माण क्षेत्र की भागीदारी बढ़ने का ही परिणाम है। यह केवल बड़े पैमाने के उद्योगों के विस्तार से ही संभव नहीं हुआ है अपितु इसमें लघु व मझोले उद्यम तथा ग्राम क्षेत्र के उद्यम भी शामिल है। हमारी औद्योगिक कार्यनीति में आधुनिक विनिर्माण के सभी स्तरों पर ध्यान केंद्रित किया जाना जरूरी है।

मैं इस बात के प्रति भी सजग हूँ कि विनिर्माण संबंधी कारगर नीतिगत प्रयासों के लिए सरकार के विभिन्न विभागों के बीच बेहतर तालमेल होना जरूरी है। इसे संभव बनाने के लिए हमने एक ऐसा तंत्र बनाने का निर्णय लिया है जो निर्णय लेने की प्रक्रिया में तेजी लाएगा और नीति निर्माण के अंतर्मंत्रालयीय इंटरफेस को सुधारेगा। मैंने अपनी अध्यक्षता में विनिर्माण संबंधी एक उच्च स्तरीय समिति गठित की है और इसमें औद्योगिक नीति के विभिन्न पहलुओं की जानकारी रखने वाले अपने वरिष्ठ सहकर्मियों को शामिल किया है। यह समिति राष्ट्रीय विनिर्माण पहल के अधीन बनाई गई नीतियों के संबंध में अपनी सिफारिशें देगी और उनके कार्यान्वयन की समीक्षा करेगी। हमारा प्रयास ऐसा नीतिगत ढांचा तैयार करना होगा। जो विनिर्माण आऊटपुट से संवृद्धि की वार्षिक दर को कम से कम 12% पर पहुंचा सके। विनिर्माण संबंधी इस उच्च स्तरीय समिति को इस क्षेत्र में होने वाली नीतिगत प्रयासें को प्रारंभ करने, उनमें तालमेल बिठाने तथा उनका मॉनीटरन करने का एकमात्र केंद्र बिंदु बनाना होगा।

राष्ट्रीय विनिर्माण प्रतियोगी परिषद् ने भी ऐसे प्रमुख क्षेत्रों का पता लगाया है जहां भारत

विश्वव्यापी विनिर्माण केंद्र बन सकता है। इसने प्रमुख उद्योगों के विकास में व्यापक व संभावनापूर्ण अर्थव्यवस्थाओं को ठोस रूप देने के लिए " समूह - दृष्टिकोण " अपनाने का समर्थन किया है। विशेष आर्थिक क्षेत्रों में जो तेजी दिखाई पड़ रही है वह भी प्रतिस्पर्धी निर्यात समूहों को तैयार करेगी। मुझे आशा है कि हमारी तरफ से किया गया यह सम्मिलित प्रयास हमारे व्यावसायिक उद्यम की आशाओं व आकांक्षाओं को पूरा कर पाएगा। एक तरफ योजना बद्ध समष्टि अर्थशास्त्रीय सहयोग व प्रयास तथा दूसरी तरफ निजी उद्यम द्वारा फर्म व उद्योग स्तरीय पहल औद्योगिक विकास की प्रक्रिया को तेज करने में सहायक सिद्ध होंगे।

पिछले कुछ वर्षों में हमारे सूचना प्रौद्योगिकी तथा दूरसंचार क्षेत्रों में उल्लेखनीय विकास हुआ है। अब हमें इलेक्ट्रॉनिक, सूचना प्रौद्योगिकी तथा दूरसंचार हार्डवेयर उद्योग के विकास के लिए सुविधाएं मुहैया करानी चाहिए। मैंने इलेक्ट्रॉनिक व दूरसंचार हार्डवेयर विनिर्माण की संवृद्धि पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एक कार्य बल तैयार किया है। दूरसंचार क्षेत्र में आई इस जीवंतता को बनाए रखने के लिए हमने मंत्रियों का एक दल गठित किया है ताकि वर्तमान सरकारी उपयोक्ताओं के सीमित दायरे (स्पेक्ट्रम) को समाप्त कर इसका यथा संभव शीध्रता से विस्तार किया जा सके। हमें आशा है कि हम वाणिज्यिक प्रयोग के लिए इस क्षमता को समय बद्ध रूप से उपलब्ध करवा पाएंगे।

बहनो और भाइयो,

हमने अवसंरचना के विकास पर विशेष ध्यान दिया है। मुझे खुशी है कि नए हवाई अड्डों के निर्माण तथा विद्यमान हवाई अड्डों के आधुनिकीकरण का कार्यक्रम योजना बद्ध रूप से आगे बढ़ रहा है। राष्ट्रीय राजमार्ग कार्यक्रम न केवल तेज गति से अग्रसर है बल्कि बी ओ टी (निर्माण प्रचालन व हस्तांतरण) मार्गों के माध्यम से व्यापक निजी भागीदारी के लिए किए गए प्रयास के उत्साहवर्धक परिणाम भी मिलने प्रारंभ हो गए हैं। हमने हाल ही में व्यापक ऋणात्मक अंतराल का निधीयन करते हुए राष्ट्रीय राजमार्ग विकास कार्यक्रम के तीन प्रमुख बी ओ टी मार्गों (स्ट्रेचो) के लिए संविदा की हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि इस तरीके से, हम भविष्य में निधि उपलब्ध करा कर ऋणात्मक अंतराल को पूरा कर सकेंगे। आपको यह जानकारी भी होगी कि हम रेल से लाए व ले जाने वाले माल के लिए छतदार गलियारों के निर्माण के लिए कार्य कर रहे हैं। इनके तथा निजी कंटेनर ट्रेनों के लिए अनुमति दिए जाने से भारतीय सुप्रचालन तंत्र (लॉजिस्टिक) का रूप ही बदल जाएगा और यह औद्योगिक प्रतियोगिता के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान होगा। हम शहरी नवीकरण तथा शहरी परिवहन पर विशेष रूप से ध्यान दे रहे हैं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि 2009 तक हम भारतीय अर्थव्यवस्था का काया कल्प कर देंगे और उसमें सक्रियता की नई भावना भर देंगे।

बहनो और भाइयो,

मुझे यह देखकर बहुत प्रसन्नता होती है कि आज सी आई आई जैसे संद्य राष्ट्र के विकास की योजनाओं और प्रस्ताव पर चर्चा करते समय अनुनय और विनय करने के स्थान पर

अधिक आत्म विश्वास से अपने विचार व्यक्त करते हैं। मेरा आपको अनुरोध है कि आपने अपना जो प्रभाव बनाया है आप उसे आर्थिक संवृद्धि और सामाजिक विकास के दीर्धकालिक प्रयासों के लिए व्यापक राष्ट्रीय सहमति बनाने में प्रयोग में लाए। हमारे विनिर्माण क्षेत्र का विकास केवल हमारी कर-प्रणाली या हमारे द्वारा मुहैया कराए जाने वाले अवसरंचनागत साधनों पर ही निर्भर नहीं है। यह हमारे घरेलू बाजार के प्रगति करने की गति, हमारे घरेलू कौशलों को सृजित करने की गति तथा तकनीकी सक्षमताओं व नई प्रौद्योगिकियों की संवृद्धि की गति पर भी निर्भर करता है। उद्योगजगत इन समस्याओं का समाधान अग्रलक्षी रूप से ढूंढ़ना प्रारंभ करना चाहिए क्योंकि ये उन्नति की राह की सबसे बड़ी बाधा बन सकती हैं।

इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में आपके जैसा औद्योगिक संघ नए विचार के प्रवर्तन तथा नीतिगत परिवर्तन के लिए अपेक्षित राजनीतिक सहमति बनाने में सक्रिय भूमिका निभा सकता है। मैं, सी आई आई की 'भारत निर्माण' में गहरी रूचि दर्शाने के लिए प्रशंसा करता हूँ। मुझे बहुत खुशी है कि आपने ग्रामीण विकास में भी व्यावसायिक सुअवसर खोज लिए हैं। मैं आपको उन महत्वपूर्ण प्रयासों के लिए भी बधाई देता हूँ जो आप 'पर्यावरण संबंधी कार्यों' को बढ़ावा देने, 'गुणवत्ता के प्रति सजगता' को बढ़ाने तथा एच आई वी/एड्स से लड़ने के लिए कर रहे हैं।

बहनो और भाइयो,

भारतीय उद्योग को औद्योगिक विकास के कारण पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों की ओर गंभीरतापूर्वक ध्यान देना चाहिए। आपको औद्योगिक कार्यकलापों के फैलाव व शहरीकरण के कारण विस्थापित हुए लोगों के पुनर्वास पर अधिक ध्यान देना चाहिए मेरे ख्याल से समय आ गया है कि हम विकास, विस्थापन व पर्यावरण के मुद्दों पर उचित रूप से विचार करें। यदि हम दीर्धकालिक गरीबी, अज्ञानता और बीमारी को समाप्त करने की चुनौती का सामना करना चाहते हैं तो तीव्र आर्थिक विकास के लाभों को सब तक पहुंचाना बहुत जरूरी है। इसी के साथ हमें ऐसी परिस्थितियों का भी बार-बार सामना करना पड़ता है जब विकास संबंधी कार्यों के कारण लोग अपने पारंपरिक आवासों से विस्थापित हो जाते हैं और अपनी जीविकोपजिन के साधनों व जीवनशैली से वंचित हो जाते हैं, जहां औद्योगिक विकास से पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। हमें शीध्र ही ऐसा विश्वसनीय तंत्र निर्मित करना होगा जिससे हम इन मुद्दों को हमारे समाज के वर्गों के बीच वैमनस्य की जड़ बनने से रोक सकें ; विकास को लोगों के जीवन और आवास के प्रति खतरा बनने से रोका जा सकें; विकास सर्वाधिक लागत प्रभावी, पर्यावरण अनुकूलनीय व कम से कम विध्वंसकारी तरीके से किया जा सके; जिससे सभी साझेदारों को (स्टैक होल्डर) को कुछ न कुछ सीमा तक विकास का लाभ अवश्य मिले। यही हमारे उस समृद्ध भविष्य तक पहुंचने का एक मात्र मार्ग है जिसका हमने स्वप्न देखा है और हमारी सरकार निकट भविष्य में इन समस्याओं को सुलझाने के प्रति दृढ़प्रतिज्ञ है।

निजी क्षेत्र को भी इस मुद्दे के महत्व को समझना चाहिए। आपको अपने कामगारों और उनके आश्रितों की शिक्षा पर और स्वास्थ्य संबंधी देखभाल पर पर्याप्त व्यय करना चाहिए। आपको अपने कामगारों को कार्य करने के लिए बेहतर परिवेश देना चाहिए तथा महिलाओं के

लिए कार्य करने की अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित करनी चाहिए। हमारी सरकार ने महिला सशक्तीकरण के लिए बहुत से उपाय किए हैं उद्योग अग्रलक्षी रूप से किए गए उपायों के तौर पर वाद का सहारा ले सकते है जिससे महिलाओं के लिए रोजगार पाना और रोज़गार को जारी रखना आसान हो जाएगा। उद्योग जगत संसाधनों के संरक्षण, पानी, भूमि और अन्य दुर्लभ संसाधनों के बेहतर प्रयोग तथा पिछड़े इलाकों के सुधार के लिए भी काफी कुछ कर सकता है।

इन सामाजिक सरोकारों के अलावा भारतीय उद्योगों को ग्रामीण विकास तथा कृषि संबंधी परिवर्तनों के विषय में भी गहराई से सोचना चाहिए। द्वि-अंकीय औद्योगिक संवृद्धि और 8-10% की राष्ट्रीय आय संवृद्धि को बनाए रखने के लिए संवृद्धि प्रक्रिया को व्यापक आधार प्रदान करना जरूरी है। हमारे देश के औद्योगिक विकास को संतुलित बनाया जाना भी अनिवार्य है। मैं जानता हूँ कि आप में से कई लोगों ने इनमें से कुछ मुद्दों पर ध्यान दिया है। आई टी सी ने योगी देवेश्वर में जो ग्रामीण विकास कार्य किया है मैं उससे बहुत अधिक प्रभावित हुआ हूँ। मुझे आशा है कि सी आई आई भी ग्रामीण विकास की ओर और अधिक ध्यान देगा। उपभोग के सामाजिक व आर्थिक धरातल में बढ़ोत्तरी होने का लाभ सीधे हमारे विनिर्माण उद्योग को ही मिलेगा।

बहनो और भाइयो,

सहायक समष्टि अर्थशास्त्रीय नीतिगत ढांचा, आधुनिक अवसंरचना तथा कौशलों व क्षमताओं के विकास में धन लगाना महत्वपूर्ण आपूर्तिगत प्रयास हैं। साथ ही मांग पक्ष पर समान रूप से ध्यान केंद्रित करके इनमें तालमेल बैठाया जाना जरूरी है। हमारी सरकार ने बहुत से ऐसे कदम उठाए हैं जिनसे विनिर्मित माल की गई मांग पैदा होगी। हमने विकास के लिए किए जाने वाले व्यय में व्यापक वृद्धि की है। हमने रोज़गार के नए अवसर सृजित करने के लिए प्रयास किए हैं। हमने किसानों को ऋण मिलने की प्रक्रिया को सरल बनाया है। ये कुछ ऐसे सरल उपाय हैं जो ग्रामीण क्षेत्र की मांग को बढ़ा सकते हैं। भूमि के पुनर्वितरण और किराएदारी संबंधी सुधार ग्रामवासी निर्धनों की आय व परिसंपत्ति आधार को उन्नत बना सकते हैं। इससे ग्रामीण आवासन व अन्य अवसंरचना की मांग में वृद्धि होगी।

जापान और चीन जैसी भिन्न अर्थव्यवस्थाओं के औद्योगिक अनुभव औद्योगिक संवृद्धि की उच्च्व दरों को कायम रखने में कृषि सुधारों के महत्व तथा पट्टे की जमानत को दर्शाते हैं। भू-सुधार राज्य सूची का विषय हैं परन्तु ये राष्ट्रीय प्राथमिकता में शामिल हैं और इसके लिए राष्ट्रीय सहमति की आवश्यकता है। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों का सामाजिक व आर्थिक सशक्तीकरण गरीब किसानों के लिए पट्टे की जमानत, और वन उत्पाद के लिए जनजातीय अधिकारों का निर्धारण सभी कुछ ऐसे प्रयास हैं जो ग्रामीण आय व ग्रामीण उपभोग को बढ़ा सकते हैं। कृषि संबंधी विकास तथा विनिर्मित वस्तुओं के बाज़ार के बीच का सुस्पष्ट सहसंबंध हमें बताता है कि औद्योगिक विकास की जड़े कृषिगत समृद्धि में विद्यमान है।

बहनो और भाइयो,

मुझे पता है कि सी आई आई विकास के सामाजिक पहलुओं में पर्याप्त रूचि लेता रहा है। परन्तु मेरा आपसे अनुरोध है कि आप सामाजिक व आर्थिक भेदभाव व वंचन, हमारे लोगों की शिक्षा व स्वास्थ्य के स्तर, रोजगार सृजन, सामाजिक सुरक्षा और महिलाओं व अल्पसंख्यकों के सशक्तीकरण की समस्याओं पर और अधिक ध्यान दें। ये सरकार व व्यवसाय जगत दोनों ही का महत्वपूर्ण सामाजिक उत्तरदायित्व हैं। स्थायी, समतापूर्ण व न्यायपूर्ण संवृद्धि प्रक्रिया स्थापित होना ही व्यावसायिक उद्यम के लिए सर्वाधिक हितकारी है।

मेरा पूर्ण विश्वास है कि उद्योग जगत अभाव ग्रस्त, निर्धन वर्गों को सशक्त बनाने में अग्रणी सामाजिक भूमिका निभा सकता है। हम सभी को यह प्रयास करना चाहिए कि कोई भी वर्ग द्रुत आर्थिक विकास के लाभ रूपी फल को चखने से वंचित न रहे। मैं उद्योग जगत से अनुरोध करता हूँ कि वह कमज़ोर वर्गों के लिए शैक्षणिक व रोज़गार संबंधी सुअवसर बढ़ाने, उनके कौशल संवर्धन के लिए निवेश करने तथा उनके रोजगार को सकारात्मक तरीके से उन्नत बनाने के लिए गहराई से चिंतन करें। सी आई आई ने आई टी आई के माध्यम से बहुत अच्छा कार्य किया है। मैं आप सभी से व्यावसायिक प्रशिक्षण और तकनीकी शिक्षा, विशेषकर निर्धन वर्गों के युवाओं के लिए, में अधिकाधिक निवेश करने का अनुरोध करता हूँ। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप फर्म स्तर पर ही अपने कर्मचारी प्रोफाइल में विविधता को निर्धारित करें तथा इसे अधिक व्यापक आधार और प्रतिनिधित्व देने के लिए अपने आप को स्वैच्छिक रूप से प्रतिबद्ध करें। आपकी ओर से की गई यह सकारात्मक कार्रवाई उस समावेशी समाज का महत्वपूर्ण घटक हो सकती है जिसके निर्माण की हम आशा करते हैं।

बहनो और भाइयो,

मुझे आशा है कि आपके राष्ट्रीय सम्मेलन में विचार-विमर्श के लिए आपके द्वारा निर्धारित अत्यंत महत्वपूर्ण एजेंडा के अलावा उन मुद्दों पर भी अवश्य चिन्तन मनन किया जाएगा जिनका मैंने पहले जिक्र किया है। मेरी यही कामना है कि आपको अपने अथक प्रयासों में पूरी सफलता मिले।

धन्यवाद।

****